Neo Colonial interpretation -

नव साम्राज्यवादी इतिहासकार भी उपनिवेशवाद को Duel Model (द्वैध उपागम) के द्वारा स्पष्ट करते है। उनके द्वारा यह कहने की चेष्टा हुई है कि औपनिवेशिक अर्थ० को दो अलग-2 Sectors- ग्रामीण, दूसरा शहरी के रूप मे विभाजित करना चाहिये।

पहले मे जहाँ पूँजीवादी उत्पादन प्रणाली और पूंजीवादी सम्बन्धो का विकास दिखायी पड़ता है वही दूसरी ओर पूर्व पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली और उत्पादन के रिश्ते बने रहे। अगर सम्पूर्ण भारतीय अर्थ० पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली मे नही बदल सकी या भारतीय अर्थ० का आधुनिकीकरण नही हुआ

तो इसके लिये साम्राज्यवादी नीतियां जिम्मेदार नहीं थीं। वास्तव में हमने तो भारत में पूँजीवाद को जन्म देने की प्रणपूर्वक चेष्टा की। किन्तु, भारत की सामाजिक व्यवस्था इतनी जटिल थी कि भारत का सामाजिक रूपान्तरण किये बगैर पूँजीवाद को जन्म दे पाना संभव नहीं था। यह हमारी सच्चेष्टता का परिणाम था कि भारत में कुलकत्ता, बम्बई, मद्रास अहमदाबाद जैसी औद्योगिक केन्द्रों का विकास संभव हुआ। भारत में औद्योगिकरण की विकास की दर 9% थी जो समसामयिक विश्व में एक तीव्रतम दर मानी जाती है अगर हमें कुछ समय और मिला होता, तो भारत का पुरी तरह से पूँजीवादी रूपान्तरण संभव हो पाता।